OM-8- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/06/2021 11:25 AM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-23 अंक-8 जुलाई-II-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

'आध्यात्मिकता' सिखाती प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी

ग्वालियर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग के 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस' प्रोजेक्ट के अंतर्गत आयोजित 'खुले दिल से करें प्रकृति से प्रेम' विषयक वेबिनार में वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका **ब्र.कु. विद्या दीदी,सेवाकेन्द्र संचालिका,खजुराहो** ने बताया कि मानव ने भौतिक सुख व लाभ की होड़ में अन्धाधुंध जंगलों व पेड़-पौधों को नष्ट किया। परिणामस्वरूप आज पर्यावरण प्रदूषण हमारे सामने है। आध्यात्मिकता, प्रकृति के प्रति जो हमारी ज़िम्मेदारी है वो हमें महसूस कराती है व प्रकृति के धर्म को निभाते हुए यह संसार कभी भूलती नहीं परन्तु हम सभी उनका मान-सम्मान करना, उनसे प्रेम करना भूल गए हैं। उन्होंने कहा कि हम प्रकृति को नुकसान पहुँचाये बिना अपने कार्य करें व ज़्यादा से ज़्यादा वृक्ष लगायें और पुराने पेड़ों को जितना हो सके बचे रहने दें। **राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. प्रहलाद** ने कार्यक्रम संचालन तथा सभी का स्वागत करते हुए बताया कि इस महामारी में लोगों ने कितना धन देकर ऑक्सीज़न लिया है। परन्तु वृक्ष हमें निःशुल्क ये सब देते हैं, अतः हमें प्रकृति का सम्मान भी करना है और संरक्षण भी। तत्पश्चात् **राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. ज्योति दीदी** ने कहा कि जैसा हम सोच रहे हैं वैसा वायुमण्डल तैयार कर रहे हैं और जिस दिन हमारी सोच परिवर्तन हो जायेगी उस दिन पर्यावरण भी शुद्ध हो जायेगा, साथ ही पूरी दुनिया हरी-भरी हो जायेगी।

कार्यक्रम में... रोहित उपाध्याय ने बताया वृक्षों को विधि पूर्वक लगाने का तरीका

कहा... पेड़ों को गले लगायें, उनसे बातें करें

फिर से प्रदूषण मुक्त हो जाये इसकी भी प्रेरणा देती है। **रोहित उपाध्याय,राष्ट्रीय संयोजक,भारत मिशन 100 करोड़ वृक्ष** ने बताया कि आज भी प्रकृति हम सब से बहुत प्रेम करती है क्योंकि वो हमारी माँ है और माँ बच्चों को

फल, सब्जी व ऑक्सीजन देने वाले पौधे लगाने का लें संकल्पः डॉ. राय

आंतरिक प्रकृति शीतल... तो ही बाह्य प्रकृति की शीतलता : ब्र.कु. सुमंत

मानसिक प्रदूषण का नियंत्रण 'संसार' को देगा जीवन

भरतपुर-राज.। विश्व पर्यावरण दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. पी.के. राय,डायरेक्टर,डी.आर.एम.आर.सेवर, भरतपुर ने ब्रह्माकुमारीज़ के यौगिक खेती एवं गृह वाटिका प्रोजेक्ट की सराहना करते हुए कहा कि हम सभी ये संकल्प लें कि हम अपने घरों में सब्जी, फल एवं ऑक्सीज़न देने वाले पौधे अवश्य लगायेंगे व हम कोई भी ऐसा कर्म ना करें जिससे प्रकृति को कष्ट पहुंचे। मुख्य वक्ता ब्र.कु. सुमंत,राष्ट्रीय संयोजक,कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग,माउण्ट आबू ने कहा कि 'ओम' शब्द का उच्चारण वातावरण को शुद्ध बनाकर हमारी आंतरिक प्रकृति के परिवर्तन की प्रेरणा देता है। आंतरिक प्रकृति शांत और शीतल होगी तो बाह्य प्रकृति भी शांत और शीतल हो जायेगी। साथ ही उन्होंने धरती पर ऑक्सीज़न की मात्रा बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने का संकल्प कराया। कार्यक्रम अध्यक्षा ब्र.कु. कविता दीदी,सह संचालिका आगरा सबज़ोन व जिला संचालिका भरतपुर ने कहा कि मानव मन की सात्विकता को जीवन में आध्यात्मिकता से ही लाया जा सकता है। मानसिक प्रदूषण का नियंत्रण ही जीव-जंतु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सभी को जीवन देकर इस संसार को बाह्य प्रदूषण से भी मुक्त कर सकता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. उदयभान सिंह,डीन,कृषि विज्ञान केन्द्र,कुम्हेर, भरतपुर ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुए सामाजिक रूप से शीशम, बरगद, पीपल तथा फलदार वृक्षों की उपयोगिता को दर्शाया तथा संस्था के सोलर ऊर्जा की प्रशंसा की। ग्राम विकास प्रभाग,आगरा सबज़ोन की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. भावना बहन तथा सत्यनारायण शर्मा ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम के दौरान

विश्व शांति भवन के प्रांगण में राजेन्द्र सिंह चारण,सी.ई.ओ.,जिला परिषद् भरतपुर, ब्र.कु. कविता दीदी, उत्तम सिंह मदेरणा,डी.आई.जी., मुद्रांक भरतपुर, ब्र.कु. बबिता दीदी आदि द्वारा संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका डॉ. दादी जानकी की विश्वव्यापी सेवाओं की याद में बरगद का पौधा तथा पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी की परमात्म याद से मानवता को ऑक्सीज़न देने के यादगार स्वरूप पीपल का पौधा रोपण किया गया।

प्रकृति के दोहन के साथ... संरक्षण का भी हो ध्यान

कामठी-महा.। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में स्थानीय सेवाकेन्द्र व ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन वेबिनार में ब्र.कु. प्रेमलता दीदी ने कहा कि पर्यावरण एवं अध्यात्म का बहुत गहरा सम्बन्ध है। ग्राम विकास प्रभाग द्वारा प्रतिवर्ष पर्यावरण की गुणवत्ता बढ़ाने एवं पर्यावरण सरंक्षण हेतु आवश्यक कदम उठाये जाते हैं। मुख्य वक्ता रूची एग्रो फार्म के डायरेक्टर ब्र.कु. महेन्द्र ठाकुर ने कहा कि प्रकृति का साइकल फिर से यथायोग्य बनाने के लिए हम ज़्यादा से ज़्यादा पेड़-पौधे लगाकर जैव विविधता (जीव-जंतु, प्राणी, वनस्पति, मनुष्य आदि) के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर सकते हैं। प्रमुख अतिथि प्रा.अवंतिका लेकुरवाळे ने प्रदूषण को कम करने के उपाय बताते हुए कहा कि बेशक हम वाहन का प्रयोग करें पर सुधारित वाहन का ही प्रयोग करें। पेड़ों की कटाई के पहले उतनी ही मात्रा में वृक्षारोपण ज़रूर करें, साथ ही 'एक पेड़ एक ज़िंदगी' का अवश्य ध्यान रखें। ब्र.कु. शिलू बहन ने 'पर्यावरण की रक्षा हम सबकी सुरक्षा' के नारे लगवाए। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. वंदना ने किया। तत्पश्चात् सभी सेवास्थान जैसे रनाला, कामठी, खापा, खापरखेड़ा, नगरधन, कापसी, तारसा, कन्हान, भिलगाव, येरखेडा, गादा आदि क्षेत्रों के सभी भाई-बहनों ने अपने-अपने घरों के आंगन में वृक्षारोपण कर पर्यावरण दिवस मनाया।

पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी जानकी को श्रद्धा सुमन अर्पित कर उनकी याद में लगाया गया बरगद का पौधा

अपने आंगन में ही उगायें सब्जियाँ व औषधीय पौधे

दिल्ली-इंदरपुरी। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बाला ने कहा कि कुदरत के दिये गये वरदानों में पेड़-पौधों का महत्वपूर्ण स्थान है। पेड़-पौधे मानवीय जीवन चक्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और हमें कई मौसमी बीमारियों से बचाने में अपना योगदान रखते हैं। इसलिए हम सुंदर गृह वाटिका, किचन गार्डन आदि के रूप में अपने घर-आंगन में ही कई सब्जियां, रंग-बिरंगे, खुशबूदार फूलों सहित कई प्रकार के औषधियों के रूप में तुलसी, कड़ी पत्ता, करेला, एलोवेरा, गिलोय आदि के पौधे भी लगा सकते हैं। ब्र.कु. गायत्री ने पास के गांव में किसानों को सात्विक यौगिक खेती का महत्व बताते हुए कहा कि इनसे न केवल भोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है बल्कि जीव जगत में नाजुक संतुलन बनाने व वातावरण को शुद्ध बनाने में भी इनका अहम योगदान है, अतः हमें खेतों के आस-पास अथवा उचित स्थान पर नीम, पीपल, आंवला आदि पेड़ लगाने चाहिए। इसके पश्चात् लोगों ने अपने घरों में सुंदर गृह वाटिका व किचन गार्डन का निर्माण किया तथा अन्य स्थानों पर भी विभिन्न पौधे लगाये।

मौके पर... दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी व दादी ईशू की याद में पौधे लगाकर, उनकी सम्भाल कर हमेशा उनसे प्रेरणा लेने का संकल्प लिया गया।